k o3R ma x R na3 k me v ` R s .6 8R

wawor ivjykmar DI.
0s. 0n. DI. 3I. mihla Aa3R kolej,
wca}

‘वर्ण’ शब्द का अर्थ रंग होता है, पर यह जाति के अर्थ में रू! हो गया है| व ` R व्यवस्था हिन्दु धर्म में एक महत्व की विशे8ता है, जो मनुष्य के गुण एvm\ कर्म के आधार पर व्यवसाय पसंद करते है A0r उसी के आधार पर वर्ण व्यवस्था तय की जाती होगी? | भागवतगीता में लिखा है - catuyRy> mya s<3. gu` kmRvwag x: और मनुस्म<t में भी "जन्म न जायते शुद्र:”| ‘वर्ण’ जाती से नहीं पर संस्कारो से तय iकya जातa है| भागवतgIta में कहा है की s<*3 पर आदिकाल में मनुष्यों का एक ही वर्ण था वे है 'हंस' "Aad0 k<yuge v ` eRn< a. h.s [it Sm<t: |" बाद में मनुष्य में परिवर्तन हो जाने की वजह से चार वर्णों की व्यवस्था रखी गई| आदिकाल में कर्म के आधिन वर्ण और)aiत तय की जाती थी और आज जन्म से ही तय करने का रिवाज बन चूका है| इसी की वजह से मनुष्य मानव न रहकर पxuबनता जा रहा है|

इस नाटक के आधार पर नाटककार ने भारतीय समाज व्यवस्था की सडन और कमजोरियों को प्रकाशित करना चाha>है| नाटककार ने बताया है कि भारतीय समाज व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है - जाति| जाति के आधार पर संपूर्ण भारतीय समाज का ढाचा निर्मित हुआ है| जाति व्यवस्था के कार` समाज में उच्च- नीच के भेद भाव पाए जाते है| उच्च जाति का व्यक्ति निम्न जाति के लोगो के साथ पशुवत अमानवीय व्यवहार करता है| उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगो का शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण करते है| यह शोषण का सिलसिला हरेक जगह पर म0जूद है| सरकारी और गE सरकारी हर स्थान पर जातिगत का विष पूरी तरह फ़ेला हुआ है|

'कोटRमार्शल' नाटक में भारतीय सैन्य विभाg का वातावरण दिखaया गया है| आम जीवन में जो प्रभाव जातिगत\ भेदभाव\ का दिखाई देता है वही भेदभाव सेना में भी पूरी तरह व्याप्त है| पFरे देश से, sेना में अलग - अलग जगहों से न0जवान भर्ती होकर आते है| sेना में प्रTyक जाती के व्यक्तियों का समावेx रहता है| उच्ची जाती के लोग भी इs में रहते है और निम्न जाती के भी लोग रहते है| आम जीवन की भांति सEय जीवन में भी उच्ची जाती के लोग निन्म जाती के लोगो पर अत्याचर गुजaरते है और कई प्रकार से शोषण

भी करते है| उच्च जाती के लोग अपनी मानसिKता को बदलने के लिये तैयार ही नहीं है| वर्ण-व्यवस्था ने जो स्थापित हित उन्हें दिया है, वे उने हमेxa कायम रखना चाहते है| प्रस्तुत नाटक का एक प्रमुख पात्र है - कैप्टन बी डी कपूर| कैप्टन बी डी कपूर उच्च जाती का है, और उसके सीने में जातिगत\ वैमनस्य का जहर पूरी तरह से भरा हुआ है| वह अपनी जाती से निम्न जाती के व्यक्ति रामचन्दरका शaरीरिक एvm\ मानसिक शोषण करता है वह हर तरह से उस पर अत्याचार गुजारता है| अपने नैतिक और शaरीरिक बल से ऊपर उठा हुआ रामचन्दर उसकी आखो का काटा बन जाता है| रामचन्दर भले ही निम्न जाती का रहा हो, किन्तु वह सीधा -सादा, कर्तव्यनिष्ट एम इमानदार है| बी डी कपूर की प्रताडनाओ के कार` वह आखिर कर उस पर गोलिया चलाने के लिए मजबूर हो जाता है|

कप्टन बी डी कपूर सड़ी हुई जाती प्रथा का प्रतिनिधित्व करता है| रामचन्दर का दोड़ में प्रथम आना, उसके लिए असहy हो जाता है| वह रामचन्दर को अपना सेवादार बनाकर शोषण करता है| रामचंदर उसके अत्याचारों से तंग आकर, सूबेदार बलवानसिह को कहकर अपनी ड्यूटी बदलवा लेता है, तब कप्टन कपूर अपनी मोटरसाइकल लेकर, रामचंदर के सामने से गुजरता है, और रुककर गाली या देता है| कप्टन कपूर बार - बार रामचन्दर को निम्न जाती का होने का अहेसास दिलाता है| उसे वह, जाति के nam pr अपमानित करता है |

प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने अस्तित्व का भी प्रश्न उठाया है| कप्टन बी डी कपूर की द्रष्टि में निम्न जाति के रामचन्द्र का कोई अस्तित्व ही नहीं है, वह जब कोटR माxल - अदालत में खुला पड़ जाता है तब खुलकर अपनी ऊची जाति पर गर्व करता है, और अपनी मानसिकता का जहर ओकता हुआ वह कहता हे - "और फिर भंगी को भंगी bनाया जाये, तो क्या bhHमण\ हो गया? " |

नाटककार बिलकुल अनछुई भूमि पर पनपने वाले जातिगत\ जहर के बिज को यहाँ पर प्रकाशित करने का प्रयास किया है, वरना देश की सीमा पर, देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देनेवाले सैनिको मे, इस प्रकार जातिवाद फैला हो, यह कहा तक योग्य है? जातिवाद\ का जहर इतना कातिल है की कप्टन बी डी कपूर को अंत में अपने ही हाथो, Svym\ को गोली मारकर आत्महत्या कर लेनी पड़ती है|

नाटककार ने यह भी इस नाटक में बताने का प्रयास किया है की, कथित उची जाती का कप्टन बी DI कपूर अमानवीय दुर्गुण\ से लिप्त है| वह न केवल निम्न जाती के रामचंदर पर अत्याचार गुजरता है, किन्तु अपनी पत्नी के साथ भी अमानवीय व्यवहार करता है| उसकी

पत्नी उससे तंग\ आकर तला k के लिए सिविल कोटRमें अपील कर देती है| स.9प में उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व असामाजिक रहता है| दूसरी और रामचन्दर निम्न जाती का होने के बावजूd सर्व गुण संपन है|असभ्य वर्तन करना उसके स्वभाव में नहीं था| रेजिमेंट के सभी अफसर, रामचन्दर के व्यक्तित्व की प्रशंसा करते है| नाटककार ने, दोनों के व्यक्तित्व के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है की व्यक्ति कर्म से महान बनता है न की उच्ची जाती में जन्म लेने से, नहीं तो कEटन बी डी कपूर का उच्च जाती में होना, किन्तु अपने कर्मो की हीनता के कारन सभी के 6<a भरी द्रi*3 का शिकार नहीं होना पड़ता|

मूलत: नाटककार neनाटक में यह बताया हE की जाती के आधार पर किसी का शोषण करना या उस पर अत्यचार krna अमानवीय है| जाती वादी लोग मानवीय मूल्यों का हनन करते rhते है और बिकास राय जेसे लोग इन मूल्यों का र9` करने का प्रयास करते है|

कुल मिलaकर कहा जा सकता है की 'कोटRमार्शल'नाटक मूलतः भारतीय समाज व्यवस्था के खोqले पन का पर्दाफाश करता है| इसमे यह बताया गया है की, दलितों के साथ हर 9ह में अन्याय होता है| सरकारी और गE सरकारी हर जगह पर दलितों को संकुचित दr*3 का शिकार बनना पड़ता है| नाटक में यह भी स्पष्ट हो चूका है की दलित भी आखिर इन्सान है, उनकि सहन शीलता की भी एक सीमा होती है| जब दुसरे लोग सारी सरहदे लाँघ जातeहै तो दलित भी Aपना सीना तान कर खड़े हो जाते है और मृत्यु से, बिना डरे उनकa सामना करते है| एक द्रi*3 से 'कोटRमार्शल'दलित चेतन को व्यक्त करने वाला नाटक है|